

## संत ज्ञानेश्वर

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षक अध्यात्म ज्ञान के मार्तण्ड युग पुरुष संत ज्ञानेश्वर जी की ज्ञान रश्मियों से आज भी पददलित समाज अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। इनके सन्देश से समाज में समन्वय और भाईचारा का भाव संचालित हो रहा है।

संत ज्ञानेश्वर का जन्म आलन्दी ग्राम में विक्रम सम्वत् 1332 भाद्र कृष्णष्टमी की मध्य रात्रि में पिता श्री विठ्ठल पंत एवं धर्म परायणा माता रूकमणी के पवित्र गर्भ से द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ था। ये चार भाई-बहन से थे - श्री निवृत्तिनाथ, संत ज्ञानेश्वर, सोपान देव और बहन मुक्ता बाई। ये कृष्ण के अवतार माने जाते थे। श्री विठ्ठल पंत के पितामह यंक्क पंत के गुरु नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ थे। श्री निवृत्तिनाथ को नाथ सम्प्रदाय के दूसरे प्रवर्तक श्री गहिनीनाथ ने स्वप्न में दीक्षा दी थी। इनकी साधना देखकर ज्ञानदेव ने अपने बड़े भाई से ही दीक्षा ली थी। सोपान देव और मुक्ता बाई ने संत ज्ञानेश्वर से दीक्षा ली।



शुरु से ही इन लोगों का जीवन बड़ा कष्टमय रहा। पिता के सन्यास से पुनः गुरु आज्ञा से गृहस्थी में आने से समाज वालों ने इनका तिरस्कार किया। वहां के ब्राह्मणों ने इसके पाश्चाताप की सजा मृत्यु बताई। इसीलिए इनके माता-पिता इन्हें अस्हाय अवस्था में ही छोड़कर चले गये।

माता-पिता के चले जाने के बाद चारों बच्चे इतने असहाय हो गये कि इन्हें भीख मिलनी भी कठिन हो गई। न जाने कितने दिनों तक ये जंगली फल खाकर रहे। इस समस्या के निदान के लिए आगे बढ़कर पैठण के ब्राह्मणों से प्रश्न किया। वे इन्हें दुत्कारते हुए बोले-तुमलोग अपनी शुधता के लिए लज्जा त्याग कर कुत्ते और चांडालों को शाष्टांग प्रणाम करते रहना। इसी से तुम्हारे पाप दूर हो जायेंगे।

पण्डितों की इस निर्णय को सुनकर श्री निवृत्तिनाथ ने कहा-मैं तो निवृत्ति हूँ, प्रवृत्ति में मेरी रुचि नहीं है मैं राजयोगी हूँ । संत ज्ञानेश्वर ने कहा-मैं सारे शास्त्रों का ज्ञाता हूँ। सौपान देव ने कहा-लोगों को भगवद् अराधना में लगाना मेरा काम है। मुक्ताबाई बोली-मैं तो जन्म से ही मुक्त हूँ। इन नन्हें बच्चों के मुख से इस प्रकार की बातें सुनकर सभी पंडित हतप्रत रह गये। उनमें से एक पण्डित ने कहा-यह ठीक है कि पाश्चाताप के लिए तुम्हारे माता-पिता ने मृत्यु को वरण किया पर इस बात का क्या प्रमाण है कि तुम लोग शुद्ध हो? ज्ञानदेव ने कहा-हमारा विश्वास है कि हम पूर्ण रूप से शुद्ध हैं। फिर भी आप कैसा प्रमाण चाहते हैं आज्ञा किजिए। इसी बीच में कुछ दुष्ट व्यक्तियों ने उनसे छेड़-छाड़ आरंभ कर दी। तुम्हारा क्या नाम है? उत्तर मिला-ज्ञानदेव। पास ही भैंसा था उसकी ओर संकेत करके एक आदमी ने इनको ताना मारा, कि यहाँ तो यही ज्ञानदेव है, बेचारा दिनभर ज्ञान का ही तो बोझा ढोया करता है। कहिए देवता, क्या आप ऐसे ही ज्ञानदेव हैं? ज्ञानदेव ने कहा-हाँ, इसमें संदेह ही क्या है। यह तो मेरी आत्मा है। इसमें मुझमें कोई भेद नहीं है। यह सुनकर किसी ने और भी छेड़छाड़ करने के लिए भैंस की पीठ पर सटासट दो सोंटे लगा दिया। और ज्ञानदेव से पूछा की 'ये सोंटे तो तुम्हें भी जरूर लगे होंगे ।' ज्ञानदेव ने कहा 'हाँ' और अपना बदन खोलकर दिखा दिया उस पर सोंटों की चिन्ह थे। फिर किसी ने कहा-तुममें और इस भैंसे में एक ही आत्मा है, तो क्या यह भैंस भी वेद मंत्र पढ़ेगा। इस पर ज्ञानदेव ने कहा-अवश्य पढ़ेगा। ज्ञानदेव ने चुपचाप भैंसे के पास जाकर भैंस की पीठ थपथपाई, और कहा हे देवता आप इन पंडितों के सामने वेद मंत्र का उच्चारण करें। अचानक भैंसा मानव की वाणी में बोल उठा- "और गायत्री महामंत्र उच्चारण करने लगे। **“ॐ भूर्भुवःस्वःतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नःप्रचोदयात्।**

यह देखते ही सारे पंडित ज्ञानदेव के चरणों पर गिर पड़े और बोले-ज्ञानदेव! मान गये कि तुम सचमुच एक महानयोगी हो। तुम अवश्य ही जगत का कल्याण करोगे। यह कहकर पैठण के महा शास्त्री ने शुद्धी पत्र दे दिया, और चारों भाई-बहन निवास की ओर चल पड़े। रास्ते में इनलोगों ने देखा की श्मशान में एक महिला अपने पति के शव के आगे विलाप कर रही है। ज्ञानदेव का हृदय करुणा से विचलित हो उठा। आगे बढ़कर ज्ञानदेव ने प्रश्न किया-क्या बात है? उसमें से एक व्यक्ति ने बताया कि इस महिला के पति सच्चिदानन्द की मृत्यु हो गई है। ज्ञानदेव ने निवृत्तिनाथ से कहा-गुरुदेव, क्या सत चित आनन्द की मृत्यु हो सकती है?

गुरुदेव ने कहा-नहीं संतचित आनन्द की मृत्यु नहीं हो सकती। गुरु की बात सुनकर ज्ञानदेव मृतक के माथे पर हाथ फेरते हुए बोले-उठो सच्चिदानन्द! तुम्हारी मृत्यु नहीं हुई है। इतना कहते ही वह व्यक्ति उठ बैठा। आगे चलकर उसने ज्ञानदेव से दीक्षा भी ली।

ज्ञानदेव में योग की अद्भूत चमत्कार बचपन से था। एक बार भिक्षा माँगकर लौटे और घर पर रोटी बनाने के लिए न ही बर्तन था और न ही आग था पड़ोसी उन चारों से घृणा रखते थे। रोटी बनाये तो कैसे? भूख से चारों भाई-बहन तड़प रहे थे। उसी समय मुक्ताबाई ने ज्ञानदेव से कहा-भैया न आग है और न बर्तन तो रोटी कैसे बनाई जाय। तब ज्ञानदेव ने अपनी पीठ दिखाते हुए मुक्ताबाई से कहा-लो बहन मेरी पीठ पर रोठी बना ले और देखते ही देखते रोटी बन गई।

बड़े भाई निवृत्तिनाथ की आज्ञा से श्रीमद् भागवत पर टीका लिखनी शुरू की। पूरे नौ सौ श्लोकों में उन्होंने ज्ञानेश्वरी लिखी। इसका प्रचार जगत जगत में फैल गया। उस समय उनकी आयु मात्र पन्द्रह वर्ष की थी। एक योगी चांगदेव जिसकी आयु 14 वर्ष थी, उन की चारो बहन-भाइयों से मिलने की इच्छा हुई। कहा जाता था कि वे चौदह वर्षों से योग साधना करते आ रहे थे। चांगदेव ने सोचा की उनलोगों की सिद्धाई की प्रमाणिकता जानने के लिए पहले एक पत्र लिखूँ कागज-कलम लेकर व सोचने लगे कि कौन-सा संबोधन उचित रहेगा। तीर्थ स्वरूप। 'पिताजी' लिखूँ या चिरंजीव (पुत्र) यह ठीक है कि उम्र में मैं काफी बड़ा हूँ, पर साधना के क्षेत्र में कौन बड़ा है, इसका क्या पता है? इसी उहापोह में उन्होंने बिना कुछ लिखे सादे कागज को ही भेज दिया। पत्र वाहक ने कागज ज्ञानदेव को दिया। वे उसक देखकर हँस पड़े। मुक्ताबाई ने उसे देखा तो वह खिल-खिलाकर हँस पड़ी और बोली- चौदह वर्ष तक तपस्या करने के बाद भी इस कागज की तरह कोरे ही रह गये! इस व्यंग्य को सुनकर निवृत्तिनाथ चौंक पड़े। कहीं चांगदेव इस बात को सुनकर नाराज न हो जायें, इसलिए पत्रवाहक से कहा, आप इस वाचाल लड़की की बातों पर ध्यान न दें। हम भी इस महान योगी से मिलने के लिए आतुर हैं। हमारा आग्रह है कि चांगदेव महाराज अपने चरण-रज से हमारी कुटिया को पवित्र करें।

निवृत्तिनाथ का संदश पाते ही चांगदेव अपने योग प्रभाव दिखाने के लिए एक सिंह पर सवार होकर, हाथ में एक सर्प चाबुक लिये हुए अपने शिष्यों के साथ चल पड़े। उस समय ज्ञानदेव अपने भाई-बहन के साथ एक दीवार पर बैठे थे। चांगदेव के आगमन का समाचार सुनकर उन्होंने सोचा कि आगे बढ़कर उनका स्वागत करना चाहिए। पास में कोई सवारी नहीं थी इसलिए उस दीवार को ही आज्ञा दी, हे प्रिय दीवार। जरा तू एक योगी के स्वागत में चलकर उनका यथोचित सत्कार करे। दीवार सक्रिय हो गई, और चांगदेव के स्वागत के लिए चल पड़ी।

उस दृश्य को देखकर चांगदेव हत्प्रभ हो गये। उन्हें समझते देर नहीं लगी कि भले ही उम्र में मैं बड़ा हूँ, पर साधना में ज्ञानदेव मुझसे श्रेष्ठ है। तुरंत सिंह से उतरकर उन्होंने ज्ञानदेव को साष्टांग प्रणाम किया, देर रात तक सभी भाई-बहनों के साथ सत्संग वार्ता होती रही। फिर भोजन के बाद शयन की बारी आयी। चांगदेव के सामने एक समस्या खड़ी हुई कि उसका सिंह कहाँ बाँधा जाये, समस्या का

निदान करते हुए ज्ञानदेव बोले इसे गौशाले में बाँध देना चाहिए। चौकते हुए चांगदेव बोल पड़े कहीं यह गायों को खा न जाये। ज्ञानदेव बोले-कोई बात नहीं। यह भी तो हमारा अतिथि ही है, इसलिए खाने को इंतजाम होना चाहिए। दूसरे दिन मुक्ताबाई स्नान-घर में स्नान कर रही थीं। उसी निर्वस्त्र अवस्था में मुक्ताबाई ने चांगदेव से अपना वस्त्र माँग लिया, चाँगदेव लज्जा के मारे चेहरा झुकाते हुए वस्त्र देने गए। उन्हें देखकर मुक्ताबाई उनकी दाढ़ी पकड़कर बोली-'क्यों, ठंढा हो गया सब ब्रह्मज्ञान? चौदह सौ वर्ष की सब तपस्या हवा हो गई? इतने वर्षों की तपस्या के बावजूद क्या स्त्री-पुरुष का भेद नहीं गया? अभी तक देह-भावना बची हुई है? यह देह आत्मा के रहने का घर ही तो है। सब इन्द्रियाँ उस घर की खिड़कियाँ हैं, जिन्हें भगवान ने हवा, पानी और भोजन डालने के लिए ही तो बनाया है, फिर खिड़की खुली हो अथवा बंद, क्या फर्क पड़ता है?

चांगदेव शर्म के मारे पानी-पानी हो गये। उनका सारा ज्ञान 15 वर्ष की तपस्विनी के आगे हवा हो गया। उसी समय चांगदेव ने अध्यात्म संबंधी पैंसठ प्रश्न किये, जिनका उत्तर फटाफट मुक्ताबाई ने उसी हालत में दिया।

कुछ देर बाद चांगदेव ने चलने की आज्ञा माँगी। उनकी सवारी के लिए सभी गौशाला में गये, परंतु वहाँ तो सिंह था ही नहीं। ज्ञानदेव बोले कहीं गाय सिंह को खा तो नहीं गई? चांगदेव आश्चर्यचकित होकर बोल पड़े-"कैसी बातें करते हैं महाराज! सिंह गायों को खा सकता है पर गाय भला सिंह को कैसे खायेगी? चांगदेव उदास होने लगे। ज्ञानदेव ने एक गाय को थपथपाते हुए कहा - माँ लौटा दो बेचारे योगी की सवारी। गाय ने जोर की छींक मारी और उनकी नाक से सिंह निकल पड़ा, योगी जी उन्हें प्रणामकर चलते बने।

संत ज्ञानदेव के दक्षिण भारत में भक्ति की गंगा से लोगों को आनंदित करते हुए कुल इक्कीस वर्ष, तीन मास पाँच दिन की अवस्था में सम्वत् 1353 मार्गशीर्ष कृष्णा 13 को जीवित समाधि ही ले ली। भारतवर्ष के महान संत ज्ञानदेव का संसार के रंगमंच से तो पटाक्षेप हो गया, परंतु अभी लाखों लोगों को उनके ज्ञान से जीवन संवर रहा है।